पाठ – 21

माता राजमोहनी देवी (जीवनी)

SPC6IL

भूमिका :– छत्तीसगढ़ में ढेरे अकन समाज सुधारक होइन आहें। जेमें सरगुजा कर राजमोहनी घलो एगोट हवे। ये अनपढ़ रहीन तबो ले समाज बर अइसन–अइसन काम करीन जेला हमन नई भुलावन। आवा ये पाठ में राजमोहनी कर बारे में पढ़ी।

माता राजमोहनी देवी कर जनम 7 जुलाई 1914 में वाड्रफनगर बलॉक कर सरसेडा (शारदापुर) गांव में होए रहीस। इनकर बियाह परतापपुर बलॉक गोबिन्दपुर गांव कर किसान परिवार में रंजीत गोंड़ कर संगे होए रहीस। अपन परिवार में 20 बच्छर संगे–संगे रहीन। इनकर दुगोट बेटा अउ पांच गोट बेटी होईन।

राजमोहनी देवी रोज दिन नियर खुखड़ी, पुटु उठाय बर जंगल बाट गईन। बिहान कर निकलल सांझ होए गईस। बकी कहींच जाएत नी भेंटाईस। माता जी बिदाय के रजमिलान सतनदी जग बर रूख तरी बइठ गईन, अउ अपन परिवार कर जिनगी ला सोंएच–सोंएच रोए लागीन। जंगल बाट ले एक झन अनचक्हा निकलीस अउ माता जी ले रोए कर बारे मे पुछे लागीस। माता जी अकाल कर बारे में रोवत–रोवत बताईन। अनजान मइनसे हर दारू मुर्गा, अतियाचार अउ लड़ाई–झगरा ला अकाल कर कारन बताईस। गोएठ ला सुनते सुनत माता जी ला आतमगियान मिल गईस। घरे पहूंच के अपन जमोच चीज ला फेंक देहीन, अउ एगोट पखना में छव दिन अउ छव राएत हाथ जोएर के मउन बइठे रहीन। गांव कर कुछ मइनसे मन ढोंगी कहें लागीन। बकी इनकर हालत ला जस कर तस देख के गांव कर थोरकन मइनसे मन ईश्वर कर ताकत माने लागीन। अउ माता जी बर झोपड़ी बनाये के उनकर तप में बिसवास करे लगीन। छव दिन माता जी हर खुंटरा निएर बइठे के बाद। सातवां दिन एकबारगी

मूसलाधार पानी बरिसे लागीस। जमोच बाट कर मुरझावल खेती हर समहेर गईस। माता जी अपन मउन बरत ला तोडिन, अउ अपन जमोच जिनगी ला समाज अउ देस सेवा में लगाय बर संकलप लेहीन। ओ पैदल घुम–घुम के दारू, मुर्गा, अतियाचार कर विरोध करे लागीन। गॉव कर मइनसे मन ला अपन संगे मिलाय लागीन। उनकर कहना रहीस धरम–करम करा, साफ सफाई ले रहा, दारू, मांस–मच्छरी छोड़ा। समाज कर बुराई ला खतम करा। राम कर नाम ला जपा।

राजमोहनी देवी राष्ट्रपिता महात्मागॉधी ला अपन गुरू मानत रहीन। वो सत, अहिंसा ला अपनाये बर, अपन हाथ कर कांतल सूत कर बनल कपड़ा पहिने बर, सादगी अउ सत्य बर उजर झण्डा अंगना में गाड़े बर कहत रहीन। झण्डा तरी चबुतरा में तुलसी पउधा लगाये के ओमे बिहाने–बिहाने जल चढ़ाये के पूजा पाठ करे बर कहत रहीन।

माताजी विनोवा भावे कर सिकछा ले गउ हतिया बंद करे बर अपन सहयोगी मन कर संगे गुवाहाटी में अनसन में बइठे रहीन। अम्बिकापुर में गउ हतिया बंदी बर चार दिन कर उपास रखे रहीन।

माता राजमोहनी देवी पढ़ल लिखल नी रहीन। बकी सिकछा कर प्रचार–प्रसार में अपन जीवन ला खफाय देहीन। गोविन्दपुर में एगोट इसकुल घलो खोले रहीन। सूखा भूखमरी, अउ अकाल ले निपटे बर माता जी ग्राम अन्नकोस कर इस्थापना करे रहीन।

माता राजमोहनी देवी विधवा बियाह अउ सगाई बियाह कर समरथन करत रहीन। वो जादू–टोना, भूत–प्रेत ला एगोट पोंपलीला कहत रहीन।

माता जी कर प्रसिद्ध आन्दोलन मद्यनिषेध रहीस। एमे सुरू–सुरू में सवांगीनेच मन रहीन। सवांगीन मन कर एकता अउ साहस ले सवांग मन ला झुके बर परीस। मद्यनिषेद आन्दोलन हर पहिले गांव–गांव में फेर धीरे–धीरे, जिला, अउ दूसर राण्ज तक फइल गईस।

राजमोहनी देवी 28 मार्च 1953 में भठ्ठीतोड़ो सत्याग्रह ओर करीन। दुद्धी कर लकड़ाबांध भठ्ठी तोड़ सत्याग्रह में 40–50 हजार मइनसे मन रहीन। ये आन्दोलन ले उत्तर प्रदेस कर दुद्धी, सिंगरौली, अगोरी, विजयगढ़, रॉची, केरल, म0प्र0, बिहार, अउ पटना कर भठ्ठी हर टुटीस। ये सत्याग्रह कर संदेश रहीस, कि दारू ले तनमन धन तीनों कर नोकसान होथे।

माता राजमोहनी देवी बच्छर 1963–64 में अखिल भारतीय नसाबंदी परिसद कर सम्मेलन में सराब बंदी कर भासन देहे रहीन। इनकर भासन ले खुस होय के श्री लाल बहादुर शास्त्री अउ मोरार जी देसाई घलो बधाई देहे रहीन।

माता राजमोहनी देवी छठवॉ दसक में अचार्य विनोबा भावे कर चलाल भू–दान महायज्ञ ला सरगुजा सहित आस–पास कर राएज में चलाय रहीन। ओ रेंगत–रेंगत सरगुजा में ढेरेच एकड़ भूई दान में पाय रहीन।

माता राज मोहनी देवी बापू धरम सभा आदिवासी सेवा मण्डल कर गठन करे रहीन। इनकर आश्रम ला धार्मिक संस्था कर मान्यता 20 मार्च 1954 में भेटाईस। राजमोहनी जी कर साल में तीन गोट रोंट कार्यक्रम चईत नवमी, कुवांर नवमी अउ माघ कर पूर्णिमा में होवत रहीस। ए कार्यक्रम मे समूचा राएज कर दूरिहॉ दूरिहॉ ले भगत मन उनकर प्रसिद्ध भजन–राम भजो भाई, गोविन्द भजो भाई, गात बजात मेला में जुटत रहीन।

माता जी कर समाज अउ देस सेवा बर मुख्य मंत्री प0 रविशंकर शुक्ल अउ भारत कर प्रथम राष्ट्रपति डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद घलो अम्बिकापुर में बधाई देहे रहीन। राजमोहनी देवी ला 19 नवम्बर 1986 में इंदिरा गांधी पुरूसकार अउ 25 मार्च 1989 में पदमश्री कर उपाधि भेंटाईस।

राजमोहनी देवी कर जीवन लीला 6 जनवरी 1994 कर संझा 7 बजे डूब गईस। ये महान विभूति कर सिराए ले सरगुजा आदिवासी अंचल में धरम–करम, सत–अहिंसा कर एगोट पाठ हर टुडेर गईस।

शब्दार्थ

दुगोट = दो। कहींजायत = कुछ भी। भेंटाईस = मिला। बच्छर = वर्ष। एगोट = एक। गोएठ = बात। बिदाय = थकना। धरी = किनारे। मइनसे = आदमी। मउन = मौन। खुटरा=पेड़ का ठूँठ। नियर=जैसा। तियाग=त्याग। एकबारगी=एकदम। मच्छरी = मछली। संझाबेरा = शाम का समय। गउ = गाय। उजर = सफेद। नांव = नाम। तबेच = तभी। जमोच= सब। पखना = पत्थर। छव = छ;। तरी = नीचे। हतिया = हत्या। सवांगीन = महिलाएं। सवांगमन = पुरूष। ओर = शुरू।

परसन अउ अभियास

बोध परसनः– गुरूजी लरिका मन ला दुई दल में बांएट के एक दुसर मन संग परसन पुछा–पुछी करूवावें। गुरूजी घलो परसन पुछें। जइसे .....

1. राजमोहनी देवी कर जनम कहां होए रहीस ?
2. माता जी बिदाय के कहां बइठ गईन ?

प्रश्न 01– खालहे लिखल परसन कर उत्तर लिखा –

1. माता राजमोहनी मइनसे मन ला का उपदेस देहीन ?
2. माता राजमोहनी कर बिहाव काकर संग होईस ?

3. माता राजमोहनी कर उपदे्स का रहीस ?
4. माता राजमोहनी ला इंदिरा गांधी पुरस्कार कब अउ काबर देहीन ?
5. माता राजमोहनी देवी कर सरगवास कब होईस ?

परसन 02– खाली जगहा ला पूरा करा –

1. माता राजमोहनी देवी कर जनम बच्छर ..... में होईस।
2. माता राजमोहनी कर भजन ..... हवे ।
3. भठ्ठी तोड़ो सत्याग्रह बच्छर ..... मे होए रहीस ।
4. माता राजमोहनी के इंदिरा गांधी पुरस्कार बच्छर ..... में भेटाइस।
5. माता राजमोहनी देवी ला पद्मश्री कर उपाधि बच्छर..... में भेंटाइस ।

परसन 03– सही गलत बतावा –

1. माता राजमोहनी कर नांव रजमन देवी रहीस ।
2. उनकर दुई गोट बेटा अउ दुई गोट बेटी रहीन।
3. माता राजमोहनी देवी राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ला अपन गुरू मानत रहीन।
4. माता राजमोहनी पढ़ल–लिखल नी रहीन।

परसन 04– माता राजमोहनी देवी अपन क्षेत्र ला सुधारे बर का–का काम करीन ?

गतिविधि –

गुरूजी ये पाठ कर थोरकन भाग ला बोले अउ लरिका मन लिखें। तेकर लरिका मन कांपी ला अदला बदली कईर के जांचे ।

योग्यता बढ़ावा –

अइसन संत महात्मा मन कर नांव बतावा जेमन समाज ला सुधारे बर काम करीन आहें।

शिक्षण संकेत :–

गुरूजी कक्षा में अउ संत महात्मा मन कर बारे में बतावें। एक अनुच्छेद ला पढ़े अउ लरिका मन ला दुहरवावें। राजमोहनी कर बारे में अउ जानकारी जुटावें अउ लरिका मन ला बतावें। तेकर पूरा पाठ ला पढ़–पढ़ के चरचा करें।

SPL2K9